IN PUT and OUT PUT THEORY.

डेविड ईस्टन का प्रमुख इनपुट-उपागम (आगत-निर्गत) उपागम तुलनात्मक राजनीति तथा आधुनिक राजनीतिक विश्लेषण के क्षेत्र में आगत-निर्गत विश्लेषण डेविड ईस्टन की अनुपम देन है। ईस्टन राजनीतिक व्यवस्था की परिभाषा "अन्तःक्रियाओं की सम... तथा राजनीति की परिभाषा..." मूल्यों के आधिकारिक निर्धारण के रूप में करता है। आगत निर्गत उपागम आँकड़ों को संगठित करने, उनको संकल्पना करने, उन्हें संहिताबद्ध करने तथा उनके जोड़-तोड़ का ढाँचा है।

राजनीतिक व्यवस्था के ... के रूप में ईस्टन दो मुख्य तत्वों की चर्चा करते हैं— ① माँग निवेश। ये आगत व्यवस्था को गतिशील प्रकृति प्रदान करते हैं। माँग को परिभाषित करते हुए ईस्टन कहते हैं- "माँग एक विचार की अभिव्यक्ति है जिसमें वे लोग जिन पर मूल्यों के आधिकारिक निर्धारण का उत्तरदायित्व है, वे किसी विषय विशेष के संदर्भ में नीति निर्धारण करें अथवा नहीं।" इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति अपनी राजनीतिक भूमिका के संदर्भ में राजनीतिक व्यवस्था ... करता है। यदि

प्रस्तुत की जाएं तो व्यवस्था के समक्ष मांग का तनाव उत्पन्न हो जाता है [ईस्टन इसे अतिभार की स्थिति कहते हैं।

जब राजनीतिक व्यवस्था के समक्ष मांगें प्रस्तुत की जाती हैं तो व्यवस्था का यह कार्य होता है कि आधिकारिक नीतियों के माध्यम से इन मांगों को निर्गत का रूप प्रदान करें। अब परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है जिसमें कुछ मांगें पूरी होती हैं तथा कुछ मांगें अपूर्ण रह जाती हैं। चूंकि यह आवश्यक है कि राजनीतिक व्यवस्था में निरंतर स्थायित्व बना रहे, अतः इस निमित्त किसी नियामक संयंत्र की आवश्यकता पड़ती है। ईस्टन ने इस प्रकार के चार नियामक संयंत्रों की ओर संकेत किया है। (i) इस कार्य हेतु संरचनात्मक संयंत्रों की आवश्यकता होती है जो द्वार रक्षक की भूमिका निर्वाहित करते हैं। तात्पर्य यह है राजनीतिक व्यवस्था की कुछ संरचनाएं ऐसी होनी चाहिए जो निरंतर जनता की मांगों का अध्ययन करती रहें तथा इन मांगों से निर्णय निर्माताओं (सरकार) को परिचित कराती रहें।

(ii) किसी भी राजनीतिक व्यवस्था में नागरिकों के दृढ़ विश्वासों

सांख्यिकीय संरचना मांगों के आंकलनीय
प्रभावशाली मापदण्ड का कार्य करती है।

(iii) समर्थक संरचना का
कार्य विभिन्न प्रक्रियाओं को निर्वाहित करा
सके कारकों को राजनीतिक निर्णय निर्माता
के निर्णय से अवगत कराना तथा बदले
राजनीतिक निर्णय निर्माताओं को विभिन्न मांगों
की प्रकृति एवं उनका गठन के विषय से
अवगत कराना।

(iv) अन्ततः Reduction संरचना
का कार्य विभिन्न तुलनात्मक मांगों का छंट
करना है।

समर्थन :-

राजनीतिक व्यवस्था के समक्ष प्रस्तुत
मांगों से जो मांगें पूरी हो जाती हैं समर्थन
का सम्बन्ध इन्हीं मांगों से है। समर्थन
प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार का हो
सकता है। चूंकि ईस्टन के चिन्तन का प्रस्थान
व्यवस्था में स्थायित्व पर है अतः ई
कारण ईस्टन Output में असफलता की
में समर्थन के तनाव की चर्चा करता है
वह तर्क देता है कि यदि राजनीतिक व्यव
में किसी प्रकार का व्यतिक्रम उत्पन्न हो
जाए तो उनके विकल्पों को तैयार रखा
जाना चाहिए। यथा व्यवस्था

व्यवस्था के कार्य-संचालन में परिवर्तन संरचनात्मक परिवर्तनों अथवा दोनों से व्यवस्था का असफलता है।

आगत का द्वितीय के सन्दर्भ में समर्थन का प्रत्यय महत्वपूर्ण है। क्योंकि मांगें ठोस मुद्दों के रूप में प्रस्तुत होती हैं और इस सीमित समर्थन चाहिए। समर्थन क्या है? जैसे क, ख को समर्थन प्रदान करता है यह हम तब कहते हैं जब या तो क ख के हितों/अभिरुचियों का स्पष्ट समर्थन करे अथवा क की समस्त गतिविधियां ख के उद्देश्यों हितों या कार्यों की दिशा में उन्मुख हो। ईस्टन के अनुसार समर्थन की प्राप्ति राजनीतिक व्यवस्था के तीन स्रोतों से होती है (i) राजनीतिक समाज का समुदाय (ii) शासन ~~सर्वोच्च सरकार~~ (iii) सत्तायें।

दूसरा प्रश्न समर्थन के प्रत्यय के सन्दर्भ में यह है कि — राजनीतिक व्यवस्था को Input को Output के रूप में परिवर्तित करने हेतु कितना समर्थन चाहिए? सन्दर्भ में ईस्टन का कथन है कि अलग-अलग परिस्थितियों में समर्थन अलग-अलग मात्रा की आवश्यकता पड़ेगी। कोई भी समाज राजनीतिक व्यवस्था हेतु समर्थन दो प्रकार से एकत्रित करता है। (i) राजनीतिक निर्णय के माध्यम से (ii) राजनीतिकरण के माध्यम से।

केंद्र से प्रसार होता है। इन नियमों और
को अध्ययन की हेतु मूल्यों का औपचारिक
विश्लेषण होता है। लेवी तथा विलियम के अनुसार
संरचना प्रकार्यात्मक प्रक्रिया से सम्बद्ध
है। संरचनात्मक का तात्पर्य है कि
अवयवों के प्रत्येक भाग उद्देश्य प्राप्ति को
व्यवस्था इसकी ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न
करना होता है जिससे अपना कार्य कर
सके। किन्तु औपचारिक अपनी प्रकार्यात्मक
भूमिका [illegible] निर्धारित कर और
[illegible] यह आवश्यक है कि
व्यवस्था अवयवों पर [illegible]
को सुनिश्चित किया जाए प्रतिस्पर्धा
अनेक तत्व आधारित है यथा – औपचारिक
द्वारा लिया गया निर्णय, इन निर्णयों के
सन्दर्भ में उपलब्धियों का प्रतिस्पर्धा
इन प्रतिस्पर्धा को आधार को [illegible]
के परिणामस्वरूप औपचारिकों द्वारा
निर्णय के कार्यों का निष्पादन। इस
प्रक्रिया को इस्टन आदर्श रूप से
[illegible] व्यवस्थाओं के आधार
स्थापित करती है और अपना अस्तित्व
कायम रखती है। निवेश-निर्गत की व्यवस्था
यह चक्रीय है। इस प्रकार निवेश-नि
अध्ययन की प्रक्रिया पर आधारित है।
[illegible]

(A) व्यवस्था स्थायी कैसे हो? (B) व्यवस्था के आने वाले तनावों का स्रोत क्या है? (C) तथा इन तनावों को दूर करने के लिए किन प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है।

(ii) विभिन्न तत्वों का क्रम इस प्रकार से है कि इन्हें ईस्टन के शब्दों में संक्षिप्त रूप में कहा जा सकता है। सर्वप्रथम निवेश तत्पश्चात मांग फिर समर्थन और तदोपरान्त निर्गत है। जो कि व्यवस्था के प्रति सदस्यों के दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है।

'ओरान यंग' नामक विद्वान ने इस के आगत-निर्गत सिद्धान्त की दो विशेषताएं बतायी हैं। (i) इसमें विभिन्न सिद्धान्तों तथा तत्वों का एक समूह प्रस्तुत किया गया है (ii) इसमें सैद्धान्तिक का अधिक ~~व्यापक~~ व्यापक है इस कारण यह तथ्य नहीं है कि यह किसी स्तर पर किसी राजनीतिक व्यवस्था विशेष से बंध कर रह जाएगा।

आलोचना :-

सर्वप्रथम यह कहा जाता है कि ईस्टन का यह दृष्टिकोण व्यवस्था के स्थायित्व तथा सातत्य का विषय, राजनीतिक विश्लेषण का केन्द्रीय प्रश्न है। दूसरे यह भी कहा गया है कि ईस्टन का आगत निर्गत उपागम यथास्थिति की प्रकृति और वर्ग विशेष का समर्थक है। पर विश्लेषण के दौरान ...

Dr. S.HUSAIN